आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांकः-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2722 • उदयपुर, बुधवार 08 जून, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

बरेटा मानसा (पंजाब) में नारायण सेवा

नारायण सेवा संस्थान का ध्येय है कि दिव्यांग भी दौड़ेगा–अपनी लाठी छोड़ेगा। इस क्रम में संस्थान की शाखाओं व दानदाताओं के सहयोग से दिव्यांग जाँच, उनका ऑपरेशन के लिये चयन तथा कृत्रिम अंगों का माप लेना व अंग लगाने का कार्य गति पर है। ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 15 व 16 मई 2022 को सचखण्ड गुरूद्वारा साहिब बहादुर (बरेटा मानसा) में हुआ। शिविर सहयोगकर्ता बिग हॉप फाउंडेशन बरेटा, मानसा (पंजाब) रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 207, कृत्रिम अंग वितरण 169, कैलीपर वितरण 24 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् जसविंदर सिंह जी (विधायक), विशिष्ट अतिथि श्रीमान् मनिन्दर सिंह जी (अध्यक्ष, बिग हॉप फाउंडेशन), श्रीमान् सुरेश जी, श्रीमान् रणजीत सिंह जी, श्रीमान् कुलदीप सिंह जी (समाजसेवी) रहे।

नेहा जी अग्निहोत्री (पी.एन.डो.), नरेश जी वैश्णव, उत्तम सिंह जी (टेक्नीशियन) सहित शिविर टीम में अखिलेश जी अग्निहोत्री (शिविर प्रभारी), श्री मनीश जी हिन्डोनिया, श्री प्रकाश जी डामोर, श्री कपिल जी व्यास (सहायक) ने भी सेवायें दी।

होशंगाबाद (मध्यप्रदेश) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान वर्षो से आपके आशीर्वाद से दिव्यांगजन सेवा में रत है। पूरे देश में स्थान–स्थान पर जाकर इसकी शाखाओं द्वारा दिव्यांगजन सहायता शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 29 व 30 मई 2022 को अग्निहोत्री गार्डन, होशंगाबाद में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता लांयस क्लब ग्वालियर आस्था रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 145, कृत्रिम अंग वितरण 135, कैलिपर वितरण 32 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् प. श्री सोमेश जी परसाई (भागवताचार्य) अध्यक्षता श्रीमान् समर सिंह जी (धनलक्ष्मी मचेन्टडाइज, प्रबन्धक), विशिष्ट अतिथि श्रीमान विपिन जी जैन (सचिव, रोटरी क्लब), श्रीमान् आशिश जी अग्रवाल (कार्यक्रम संयोजक), श्रीमान् प्रदीप जी गिल्ला (रोटरी क्लब, अध्यक्ष), श्रीमान् शील जी सोनी (रोटरी क्लब, संरक्षक), श्रीमान् राजीव जी जैन, श्रीमान् समीर जी हरडे (रोटरी क्लब सदस्य) रहे। डा.सिद्धार्थ जी लाम्बा (ऑर्थोपेडिक सर्जन), श्री रामनाथ जी ठाकुर (पी.एन. डो.), श्री किशन जी सुथार (टेक्नीशियन) सहित शिविर टीम में श्री हरिप्रसाद जी (शिविर प्रभारी), श्री गोपाल जी गोस्वामी, श्री हरीश सिंह जी रावत (सहायक) ने भी सेवायें दी।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity
विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच,
ऑपरेशन चयन एवं
कृत्रिम अंग (हाथ–पांव) माप शिविर

दिनांक : 12 जून, 2022

▪ माता बाला सुन्दरी प्रागंण, शहजादपुर, अम्बाला, हरियाणा
▪ श्री एसएस जैन संघ मार्केट, बल्लारी, कर्नाटक

इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमन्त्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

पू. कैलाश जी 'मानव'

'सेवक' प्रशान्त भैया

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

1,00,000 We Need You !
से अधिक सहयोग देकर, दिव्यांगों के सपनों को करें साकार
अपने शुभ नाम या प्रियजन की स्मृति में कराये निर्माण

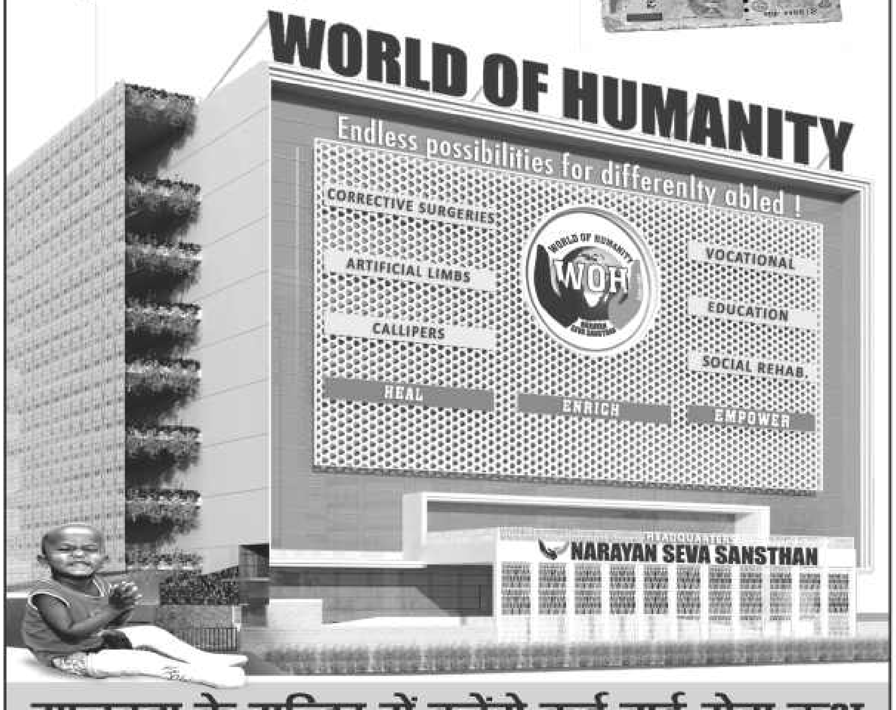

मानवता के मन्दिर में बनेंगे कई वार्ड-सेवा कक्ष
* 450 बेड का निःशुल्क सेवा हॉसपीटल * 7 मंजिला अतिआधुनिक सर्वसुविधायुक्त* निःशुल्क शल्य चिकित्सा, जाचें, ओपीडी * भारत की पहली निःशुल्क सेन्ट्रल फेब्रीकेशन यूनिट * प्रज्ञाचक्षु , विमंदित, मूकबधिर, अनाथ एवं निर्धन बच्चों को निःशुल्क आवासीय व्यावसायिक प्रशिक्षण
अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org
Cont. : 0294-6622222, +917023509999 (WhatsApp)

भिण्ड (मध्यप्रदेश) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान वर्षो से आपके आशीर्वाद से दिव्यांगजन सेवा में रत है। पूरे देश में स्थान–स्थान पर जाकर इसकी शाखाओं द्वारा दिव्यांगजन सहायता शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 22 मई 2022 को श्रीमती विमला देवी स्पेशल विद्यालय जामना, भिण्ड मध्यप्रदेश में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता श्रीमान् शिवभान सिंह जी रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 61, कृत्रिम अंग वितरण 36, कैलिपर वितरण 26 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् प्रवीण कुमार जी फुलपगारे (ए.डी.एम. साहब, जिला भिण्ड) अध्यक्षता श्रीमान् शिवभान सिंह जी (संस्थापक), विशिष्ट अतिथि श्रीमान् शिवप्रताप सिंह जी भधोलिया (समन्वयक जन अभियान परिशद), श्रीमान् पवन जी भास्त्री (भागवताचार्य समाजसेवी), श्रीमान् उपेन्द्र जी व्यास (समाजसेवी), श्रीमान् हर्शवर्धन जी (सक्षम संस्थान, भिण्ड) रहे।

डा.रामनाथ जी ठाकुर (पी.एन.डो.), श्री भंवर जी (टेक्निीशियन) सहित शिविर टीम में श्री मुकेभा जी भोर्मा (शिविर प्रभारी), श्री सुनिल जी श्रीवास्तव, श्री कपिल जी व्यास, श्री हरीभा सिंह जी रावत (सहायक), श्री प्रवीण जी यादव (विडियोग्राफी) ने भी सेवायें दी।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

हमारी ऐसे माताएं – बहनें। हाँ, अनूसूया माता, सावित्री माता जो अपने पति सत्यवान को भारीर यमराज के पास से, चगुंल से मुक्त करा के ले आवे। ऐसी सीतामाता जिन्होंने कहा था–

सुख में आ आ कर रहूं
सकंट में अब मुँह फेरू।

मैं आपका सुख में भी साथ दूंगी और दुःख में भी साथ दूंगी। ऐसी माताए –बहनें। बोलिये श्रीरामचन्द्र भगवान की जय। कपिपति हुनमानजी महाराज की जय। संत समाजु जो जंगम तीरथ राजु। ऐसा तीर्थ रामे वरधाम महाराज। लाला, बाबू जब मन में हर्श होता है, जो उमंग होता है। कहते हैं ना– आगे बढ़ो, आगे कैसे बढ़ेंगे ? पहला कदम तो बढ़ाना ही पड़ेगा और एक कदम जो बढ़ाएंगे। मैं जब छोटा था तो हमारे जीप से कई बार उदयपुर से भीण्डर, भीण्डर से उदयपुर कई बार आते थे। तो स्टार्टर नहीं होता था, जीप में उस समय हेण्डल लगाते थे। एक हेण्डल लिया और आगे एक छेद में जीप गाड़ी में फंसाया। एक बार घुमाया, दो बार घुमाया, चार बार घुमाया, बीस बार घुमाया और फिर इक्कीस बार घुमाते ही गाड़ी स्टार्ट हो जाती थी। अब कोई कहता है – इक्कीसवे हेण्डल में गाड़ी स्टार्ट हूई। अरे भाई पहला लगा तो दूसरा आया, दूसरा लगा तो तीसरा आया, तब इक्कीसवा आया। इसलिये हर कार्य बढ़िया है।

और कपिपति कह रहे है– हम समुद्र को सोख जायेंगे। हम तो समुद्र के जल को सुखा देंगे। हम पूरे समुद्र में पत्थर भर देंगे, शिलाएं भर देंगे। रामचन्द्र भगवान मुस्करा रहे हैं और समुद्र ने कहा था–आपके नल और नील नाम के दो वानर हैं। हाँ, पहले कहते थे बचपन में, ऋशि–महर्शियों के कोई कमडंल अन्दर डाल देते थे, कोई वस्त्र अन्दर डाल देते थे। पानी में, जल में तो पानी में डूब जाते थे। तो एक दिन एक ऋशि ने कह दिया भाई– तेरा जल में डाला हुआ कोई चीज डूबेगी नहीं, तैरेगी। ये तैराने वाले घन याम।

अब सौप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारें हाथों में। कहते थे तो है लाला लेकिन बुद्धि बोलती है, जिह्वा बोलती है। जिह्वा बोलती है पर अन्दर घमण्ड। ये में, मेरा, ये मेरी तस्वीर है। ये जो मेरा रूप लोगों मे चित्रित हो गया। में इतना बड़ा, मैं उतना बड़ा। उसी में सब कुछ।

सम्पादकीय

जीवन कितना लम्बा और है? यह कौन जान सका है? फिर व्यामोह के पाश में स्वयं को क्यों आबद्ध करूँ? क्यों कल की चिंता में डूबा रहूँ? क्यों आज के आनंद से वंचित रहूँ? परमात्मा ने प्रकृति की रचना करके असँख्य प्रकार के जीव बनाए हैं।

आश्चर्य है कि अधिकतर जीवों में से कल की कोई चिंता में नहीं रहता है। यह बात ठीक है कि मनुष्य को बुद्धि एवं विवेक मिला है तो वह त्रिकाल विचार कर सकता है।

करना भी चाहिए, पर किसका? होना तो यह चाहिए कि हम भूतकाल में मिली असफलताओं से सीखते रहें। वर्तमान को सुधारें, भविष्य स्वयं सुखद हो जाएगा। हमें यदि भावी की चिंता करनी है तो यही करनी चाहिये कि जिस उद्देश्य से परमात्मा ने हमें बनाया, यह यदि छूट रहा है तो भविष्य में उसकी प्राप्ति में की चिंता करे। भौतिकवादी चिंता बस चिंता है, मानवतावादी चिंता तुरंत चिंतन में बदल जाती है, तो चिंता में क्यों उलझें, चिंतन को ही अपनायें।

कुछ काव्यमय

सेवा ज्योति प्रकट भई, तो भागे तमकार।
वही मनुज होता सफल, वही करे ललकार।।
जिस जीवन का ध्येय हो, करना बस उपकार।
वो ही समझा मान लो, मानव जीवन सार।।
पीड़ा में कोई पड़ा, नहीं मुझे संताप।
इससे बढ़कर है कहाँ, इस धरती पर पाप।।
जो परपीड़ा पिघलता, वो सच्चा इंसान।
हर कोई ऐसा बने, क्यों कोई नादान।
करुणा की नदियां बहे, जिस मानव के मांय ।,
उसको प्रभु भी प्रेम दे, शरणागति पा जाय।।

अपनों से अपनी बात

सेवा भगवद्कार्य

नन्हा मुन्हा बालक टाबर,
नंग घंड़गा डोले रे।
कुण तो वांका
दुःखड़ा सूं बोले रे।।

बात है संस्था के असहाय सहायता शिविर की। उदयपुर की सुन्दर झीलों की छवि, सुन्दर भवन, बाग–बगीचों की, रमणीय नगरी के समाप्त होते ही मात्र 15 किमी. की दूरी पर सेवा की गाड़ी जा रही थी हमेशा की अपने सिर पर 30–40 किलो लकड़ियों का बोझ लिए आदिवासी बालक उम्र लगभग 12–13 वर्ष की। अपने पेट की भूख को मिटाने के लिए शहर की ओर लकड़ियां लिए आ रहा था। शरीर पर मैल की मोटी परत। कपडे के नाम पर रसोई में पीछे के काम में लिए जाने वाले कपड़े से भी मैली फटी–पुरानी कमीज, नंगे पांवों की दशा में दुर्बल शरीर को संभालते हुए शहर की ओर आ रहा था। उसके पतले–पतले कांपते पैरों से यूं लग रहा था जैसे

लकड़ी की भारी अब गिरी–अब गिरी। मेरे मुंह से निकला "उफ" कितने जल रहे होंगे इसके –नंगे पैर?

तभी पास बैठे एक सज्जन बोल उठे– "इनकी तो आदत पड़ गई है– दुःख जैसी कोई बात नहीं।"

क्या वास्तव में आदत पड़ गई है? क्या वास्तव में ही इन्हें तकलीफ नहीं होती? नहीं नहीं यह तो इनकी मजबूरी है। शरीर तो इनका भी वैसा ही है –जैसा है हमारा। कांटे तो इनके पैरों में भी वैसे ही चुभते हैं, जैसे बिना जूतों के हमारे। सर्दी–गर्मी, सुख–दुःख, भूख–प्यास की अनुभूति तो इन्हें भी बराबर होती ही है –भाई साहब।

और ध्यान बराबर उस बच्चे पर रहा जब तक वो आँखों से ओझल न हो गया। मन से एक आवाज आई "शायद हमारे हृदय की संवेदना ही कहीं खो गई है –हृदय की करुणा ही समाप्त हो चुकी है। अन्तर की रस गगरी खाली हो रहीं हैं।"

आइए, भगवत कार्यों से जुड़कर कुछ चिंतन–मनन कर पूछे अपने को कि कहीं हमारे साथ तो यह नहीं हो रहा है? ऐसा कि मन की संवेदना ही शून्य हो जाये नहीं–नहीं। आप और हम तो ऐसा नहीं होने देंगे। किसी जरूरतमंद गरीब, असहाय दुःखी, प्राणी को देखकर आपश्री के पांव रूकेंगे–हाथ उठेंगे सेवा के लिए और अंतः से बरसेगा स्नेह ! आइये करुणा सागर प्रभु से करें (प्रार्थना) –

बंद न कर देना
अपने घर के दरवाजे,
पता नहीं कब कोई
पाहुन घर आये।
रिक्त न कर देना
अंतर की रस गगरी,
पता नहीं कब कोई
प्यासा स्वर आये।।

–कैलाश 'मानव'

धन तो तुम्हारा था ही नहीं

एक व्यक्ति के पास बहुत सारा पुश्तैनी धन था। इस पर भी उसे संतोष नहीं था। किसी गरीब या जरूरतमंद की मदद करना तो दूर स्वयं भी ठीक से खाता पीता भी नहीं था। पत्नी ने उसे कई बार समझाया भी कि पैसा जोड़ने की बजाय अपने स्वास्थ्य पर भी ध्यान दो। गरीबों की मदद किया करो। उन की दुआओं से तुम प्रसन्न रह सकोंगे और श्री लक्ष्मी भी खुश होकर सदा हमारे यहां रहेगी।

किंतु उसने एक न सुनी उसे इस बात की चिंता थी कि कभी कोई यह धन चुरा ले गया तो क्या करूंगा। एक दिन वह धन की पोटली बांधकर रात को चुपचाप गांव

के बाहर गड्ढा खोदकर उसमें दबा आया, अब बह रोजाना उस स्थान पर जाता और देख आता। पड़ोस के गांव का एक चोर प्रायः उस गांव में आया करता था। उसने इसको हमेशा उसी जगह आकर एक निश्चित स्थान पर आंख गड़ाए लौटते देखा है। उसे यह समझते देर न लगी कि इस स्थान पर अवश्य कोई मूल्यवान वस्तु दबी हुई है। एक दिन वह पौ फटने और उस व्यक्ति के पहुंचने से पूर्व ही उस स्थान पर पहुंचा और खुदाई कर पोटली निकाल ली। सुबह होने को ही थी ,चोर उस गड्ढे को खुला ही छोड़ रफूचक्कर हो गया। अंधेरा छंटते ही व्यक्ति घर से अपने धन के स्थान पर ज्योंही पहुंचा उसके होश उड़ गए। उसका सारा धन जा चुका था। इतनी बड़ी हानि वह सहन ना कर सका और वहीं रोने लग गया। कुछ देर बाद पत्नी आई उसने सारी स्थिति जानी। वह बोली धन तो पहले भी आपके काम नहीं आया था और ना आपके जीवन में काम आ सकता था क्योंकि उसे आप ने एक जगह स्थिर कर दिया था। आपका अधिकार उस पर जरूर था फिर भी उसे छिपा कर रखा। ऐसी हालत में दुखी होने की बजाय अपनी आंखें खोलो और बचे खुचे धन को परमार्थ में लगाओ जो हमारे जीवन में खुशियों का कारण बन सके। **– सेवक प्रशान्त भैया**

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

कैलाश ने विस्तार से उन्हें अपनी गतिविधियों और सेवा कार्यों से अवगत कराया। वह अपने साथ शिविरों के चित्र भी ले गया था, वे भी बताये तो सभी प्रभावित हो गये। उनका एक पारिवारिक ट्रस्ट चलता था, उसमें से 60 हजार रु. वे देने को तैयार हो गये। उन्होंने कहा कि महीने भर में यह राशि वे भिजवा देंगे जिससे अनाथों हेतु 3 कमरे तो बन ही जायेंगे। मुम्बई के रामदेव मूंदड़ा भी सेवा के कार्यों से प्रभावित हो गये। उन्होंने 20 हजार रु. अपने पिता के नाम दिये तो संस्था की जमीन पर पहले कमरे का निर्माण हो गया।

मफत काका कैलाश के कार्यों से बहुत प्रसन्न थे। उनका उदयपुर आना बढ़ गया। उन्हें लेक एण्ड होटल में ठहराते। नाश्ता वहां का नहीं करते वरन अपने साथ लाये खाखरे खाकर ही नाश्ता करते। भोजन भी होटल का नहीं करते, कहते –कैलाश? क्या अपने घर खाना नहीं खिलायेगा? कैलाश यह सुन प्रसन्न हो जाता और अत्यन्त प्यार से घर भर के लोग उन्हें खाना खिलाते।

मफत काका को पानरवा जाकर गरीबों के बीच समय व्यतीत करना बहुत अच्छा लगता। इस बार महन्त मुरली मनोहर भी अत्यन्त चाव से पानरवा शिविर में भाग लेने आये। पानरवा के पास ही मफत काका को बैलगाड़ी में बिठाया तो उन्हें बहुत आनन्द आया। इस बार मास्टर बलवन्त सिंह मेहता भी आग्रह करके साथ आये थे। इतने दिग्गजों के शिविर में भाग लेने से कैलाश फूला नहीं समा रहा था।

धीरे–धीरे शिविर बढ़ते गये। विभिन्न क्षेत्रों से शिविर आयोजित करने की मांग आने लगी। मांग को नियंत्रित करने एक शर्त लगा दी गई कि जिस गांव में कोई भी 650 रु. दान देगा, उस गांव में ही शिविर लगाये जायेंगे। यह योजना सफल हुई। इसी बहाने गांव के सेठ साहूकार सक्रिय हो गये, वे यह राशि प्रायोजित करने लगे। राशि निमित्त मात्र थी मगर इससे आयोजन को गंभीरता मिलने लगी।

शिविरों में कई नौजवान भी आते थे। ये कुछ काम नहीं करते थे। इनका उपयोग करने की भी योजना बनाई। अब शिविर में अन्य साधनों के साथ गैंती–पावड़ों व तगारियों की भी व्यवस्था की जाने लगी। कहीं नहीं होते तो ये साधन खरीद लिये। शिविरों में आने वालों की संख्या बढ़ती गई। 4–5 हजार लोगों का एकत्र होना मामूली बात थी। युवकों को गैंती–पावड़े व तगारियां देकर श्रमदान हेतु प्रेरित किया जाता। कहीं स्कूल का कुछ कार्य तो कहीं गांव का ही छोटा बड़ा काम। युवा शक्ति के श्रम केउपयोगसे गांव को ही फायदा होने लगा। युवकों में भी स्वावलम्बन की भावना पनपने लगी। इसी बहाने गांव में पेड़–पौधे लगने लगे, जगह–जगह सफाईयां होने लगी। यह प्रयोग अत्यन्त सफल रहा। धीरे–धीरे युवकों को अन्य काम सिखाने के भी प्रकल्प शुरू किये।

अंश - 119

श्रद्धालुओं ने किया भक्ति का रसपान

आध्यात्मिक ज्ञान के प्रसार हेतु अप्रेल–मई में मुरैना, कैलारस–मुरैना एवं वृदांवन में श्रीमद्भागवत कथाओं का पारायण संस्थान के तत्वावधान में सम्पन्न हुआ। जिनका विभिन्न मीडिया चैनलों से प्रसारण हुआ। जिससे घर बैठे श्रद्धालुओं ने भक्ति रस का पान किया।

मुरैना – दूर वार परिवार कोलुआ के सहयोग से मुरैना (मध्यप्रदेश) में 27 अप्रेल से 3 मई तक दोपहर 1 से अपरान्ह 4 बजे तक श्रीमद्भागवत कथा पारायण का भव्य आयोजन धिरौना सारकार के सानिध्य में सम्पन्न हुआ। कथा व्यास पूज्य श्री रमाकान्त जी महाराज ने कहा कि भगवतकथाओं की बात ही निराली है। बड़े–बड़े साधु संत, सिद्ध योगीन्द्र मुनीन्द्र भी उन्हें सुनने को तत्पर रहते है। सातों दिन कथा का सत्संग चैनल से देशभर में प्रसारण हुआ, जिससे श्रद्धालुओं ने घर बैठे ही भक्तिगंगा में डुबकी लगाकर अपने को धन्य किया।

वृदांवन –राधा गाविन्द मंदिर, श्रीबृजसेवा धाम, वृंदावन–मथुरा में 10से 16 मई तक कथा व्यास पूज्य श्री बृजनन्दन जी महाराज के श्रीमुख से पतित पावनी श्रीमद्भागवत का पारायण सानन्द सम्पन्न हुआ। जिसका आस्था चैनल से प्रसारण भी हुआ। कथा व्यास पूज्य महाराजश्री ने भगवान के विविध लीला प्रसंगो का मार्मिक वर्णन करते हुए कहा कि महान पुरूषों ओर भाास्त्रों के वचनों में वि वास करके हमें अपने जीवन को सार्थक करना चाहिए। मनुष्य को काम, भय, क्रोध,मोह के वश होकर या किसी अन्य दुर्गुण के प्रभाव में एक क्षण भी व्यर्थ नहीं कर मानव देह को धारण करने का अर्थ समझते हुए उसे धन्य करने के कार्य करने चाहिए। इससे परमात्मा भी प्रसन्न होंगे।

कैलारस – मां बहरार माता मन्दिर, कैलारस–मुरैना (मध्यप्रदेश) में 14 से 20 मई तक श्रीमद्भागवत का आयोजन सानन्द सम्पन्न हुआ। श्री विश्वंभर दयाल जी परिवार के सौजन्य से आयोजित इस भक्ति ज्ञान यज्ञ में दूर दराज के सैकड़ो श्रद्धालुओं ने भाग लिया। व्यास पीठ पर बिराजित पूज्य श्री रमाकान्त जी महाराज ने कहा कि परमात्मा नित्य है। उसका संयोग भी नित्य है। विश्वास और श्रद्धा के अभाव में हम उसे भूले हुए है। यही वजह है कि जीवन में पग–पग पर हमें ठोकर खानी पड़ती हैं। हमें आज और अभी से उसकी शरण लेनी चहिए जो नित्य सत्य है। कथा का संस्कार चैनल से सातों दिन देशभर में सीधा प्रसारण हुआ।

जमीन पर सोना: इसमें छिपा है अच्छी सेहत व लंबी उम्र का राज

आयुर्वेद के अनुसार, फर्श पर सोने के कई लाभ हैं। रीढ़ की हड्डी पर इसका प्रभाव अधिक होता है। यह सेंट्रल नर्वस सिस्टम से जुड़ी होती है। जिसका संपर्क सीध मस्तिश्क से होता है। इससे शरीर का संतुलन बना रहता है। हमारे पूर्वज जमीन पर चटाई बिछाकर सोते थे, इससे वे पूरी तरह स्वस्थ और दीर्घायु होते थे।

मोटा तकिया न लगाएं

फर्श पर सोते हैं तो बिना तकिए या हल्का तकिया लगाकर सोएं। मोटे तकिए से गर्दन दर्द और सर्वाइकल की समस्या हो सकती है।

कौन नहीं सोएं

बुजुर्ग जमीन पर न सोएं, वातशूल जोड़ों का दर्द व ऑस्टियोपोरोसिस की समस्या बढ़ सकती है। चोट या घाव एलर्जी एवं मांसपेशियों में दर्द हो तो जमीन पर न सोएं। कैंसर, टीबी, अस्थमा, गठियां में भी जमीन पर सोने से बचें।

ये हैं फायदे –

- गर्मी के मौसम मे जमीन पर सोने से शरीर को ठंडक मिलती है और इससे मानसिक तनाव भी कम होता है। गहरी नींद आती है।
- शरीर में रक्तप्रवाह सही रहता है। मांसपेशियों में आराम मिलता है। कम उम्र में जकड़न से राहत मिलती है।
- जमीन पर सोने से पीठ दर्द और पीठ संबंधी समस्याएं दूर होती हैं।
- जमीन पर सोने से मांसपेशियों संबंधी रोग, कंधा, ऊपरी व निचली पीठ, बांह, कलाई, सीना, कोलरबोन, गर्दन, सिर आदि से जुड़े दर्द में राहत मिलती है।
- अगर इसकी पहल करते हैं तो अपने मन को पहले तैयार करें। शुरू में कुछ दिन दिक्कत आ सकती है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन
2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार
2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं
2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं
2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी
2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र
आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन
वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ
6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ
विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

अनुभव अमृतम्

बच्चों ने प्रार्थना की। दूसरे दिन से नियमित रूप से पढ़ाई चलने लगी। सेवाधाम के अंडर ग्राऊण्ड मे टांडे लगाई। निंबाहेडा के पत्थर की– लाला। बाबू ठाकुर जी काम कराते रहे। एक मन में आया था। बच्चे मुख्य रूप से या तो शरीर से विकलांग होते हैं, टेढ़े–मेढ़े पाँव होते हैं। बीच की पंक्तियों में कुछ आया है। कैसे चैनराज जी साहब का मिलन हुआ?

हॉस्पिटल का उद्घाटन भी हुआ– मानव मंदिर का। फिजिकली हेंडिकेप उनके पैर सीधे भगवान ने करवाए। नारायण सेवा का माध्यम बना नर सेवा नारायण सेवा एक होता है। मूक बधिर 25 बच्चे भगवान ने कृपा करके भेजे। मूक बधिर विद्यालय मूक बधिर बच्चों के लिए उनके टीचर्स स्पीच थेरेपी वाले थे। इसी तरह से प्रज्ञा चक्षु बच्चे भी 25 पधारे कृपा करके, और मानसिक दिव्यांग बच्चे कि उम्र तो 15 साल की मगर बुद्धि 5 साल की।

बच्चे की उम्र 12 साल की मगर बुद्धि 4 साल तक की है। उसके भी स्पेशल टीचर रखे हुए, और ये क्रम बढ़ता चला गया। पिछले दिनों में 1989 में किस प्रकार के सेवा केंप किये गए। 1 जून 1989 से 31 जुलाई 1989 तक के इन 60 दिनों में कई जीवन जी लिये। 10 किलो वजन का एक बैग दाहिने कंधे पर हमेशा रहता था। उसमें एलबम है उसमें रसीद बुक है उसमें सेवा संदीपन नाम की एक पत्रिका है। उसमें एक फोल्डर है ठाकुर जी की कृपा।

कभी मांगा नहीं था– बचपन में। बहुत शर्म आती थी मांगने में। अपने लिए किसी को कुछ कहना मरने के बराबर। परंतु मन ही ऐसा था कि जब गांव में भीण्डर में जीमण होता, निमंत्रण आते, जीमणे आइएगा। मैं बहुत कम जाता था। या तो मेरी माता जी घर में रहते थे वृद्धावस्था की वजह से भी तबीयत भी ठीक नहीं रहती थी। इस वजह से या मैं रहता था।

जीमणे जाने में भी शर्म आती थी। निमंत्रित होने के बावजूद, वही व्यक्ति कैलाश चन्द्र एक महाराजश्री ने रामदास जी महाराज से कहा था कैलाश वहाँ जाओ। उन मंदिर में जाओ। ट्रस्ट में जाओ। वहाँ घी ऐसा बहता है जैसे पानी बह रहा हो। उनको हाथ जोड़कर निवेदन करो नारायण सेवा में ऑपरेशन हो रहे हैं। नारायण सेवा में मूक बधिर बच्चे, दिव्यांग बच्चे, मानसिक विमंदित बच्चे रह रहे हैं। फिजीकल हेंडिकेप है उनसे लाओ। मैंनें कहा महाराजश्री हमें तो मांगने में शर्म आती है। बोले शर्म किस बात की? कई महापुरुषों ने मांगा है। महामना मदन मोहन मालवीय ने जब काशी हिंदू विश्वविद्यालय बनवाया सबसे मांगा। निजाम हैदराबाद से भी मांगा कहा करते थे।

मर जाऊं माँगू नहीं, अपने तन के काज।
परहित कारण मांगता, मोहि न आवे लाज।।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 472 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023